मानवीय संबंधों में अवमूल्यन और गोविन्द मिश्र की कहानियाँ

पं.रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर के
कला संकायांतर्गत हिन्दी विषय में
पी–एच.डी. की उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध-रूपरेखा

2015

शोध–निर्देशक

डॉ.(श्रीमती) कृष्णा चटर्जी
सहायक प्राध्यापक (हिन्दी)
शासकीय विश्वनाथ यादव
तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी
महाविद्यालय,
दुर्ग (छ.ग.)

शोधार्थी

अल्का
शासकीय विश्वनाथ यादव
तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी
महाविद्यालय,
दुर्ग (छ.ग.)

प्राचार्य

डॉ. सुशीलचन्द्र तिवारी
शासकीय विश्वनाथ यादव
तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय,
दुर्ग (छ.ग.)

शोध-केन्द्र

शासकीय विश्वनाथ यादव तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय, दुर्ग (छ.ग.)

शोध–प्रबंध का शीर्षक

''गोविन्द मिश्र की कहानियों में अभिव्यक्त मानवीय संबंधों का अवमूल्यन''

1. भूमिका

समकालीन कथाकार गोविन्द मिश्र हिंदी साहित्य जगत् में अपना विषिष्ट स्थान रखते हैं। पिछले दो दषकों से गोविंद मिश्र लगातार कहानियाँ, उपन्यास, यात्रा–वृत्तान्त एवं आलोचनात्मक लेखन में सक्रिय हैं। उनके पास समृद्ध अनुभव जगत है। बहुआयामी प्रतिभा के धनी गोविंद मिश्र लब्ध प्रतिष्ठित रचनाकार हैं। अपनी रचनाओं से उन्होंने न केवल हिन्दी साहित्य को समृद्ध किया बल्कि गहन संवेदना, व्यापक अनुभव, सचेतन, रचनाषीलता से अनेक अलिखित क्षितिजो का संधान भी किया। कथ्य और षिल्प की नूतनता उनकी रचनाओं की विषेषता है। डॉ. रामजी तिवारी के अनुसार–''श्री गोविंद मिश्र ऐसी विलक्षण प्रतिभा के कथाकार हैं, जो अपने को कभी दुहराते नहीं। उनकी दो कृतियों को एक साथ रखकर यह कहना कठिन है कि ये एक ही व्यक्ति की रचनाएँ हैं। मिश्र जी अपनी प्रत्येक कृति में विषिष्ट अनुभव एवं अनछुए विषय को नये षिल्प में ढालकर प्रस्तुत करते हैं।'' इस तरह प्रयोगषील रचना धार्मिता उनके लेखन की विषेषता है। षिल्प एवं भाषा के स्तर पर गोविंद मिश्र की कहानियाँ सषक्त हैं। जिजीविषा, मानवीयता एवं प्रेम के स्त्रोतों की खोज इनकी कहानियों की विषेषता है। राजनीतिक सामाजिक जीवन की विसंगतियों को, बुद्धजीवियों की अवसरवादिता, चापलूसी एवं दोगलेपन का चित्रण इनकी कहानियों में सहज ही देखा जा सकता है। इस तरह गोविंद मिश्र समकालीन कथा–प्रतिमानों में नयी संभावनाएँ देते हैं। हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी भाषा अत्यंत सषक्त एवं प्रभावी है। वे समकालीन सषक्त कथाकार हैं। गोविंद मिश्र की कहानियाँ हमेषा भाषा के स्तर पर एक खास तरह की ताजगी और एक खास तरह का नयापन देखने को मिलता है।

2. प्रस्तावित शोध कार्य को निम्नांकित अध्यायों में विभक्त कर पूर्ण किया जायेगा :–

प्रस्तावना

अध्याय 01 : हिन्दी कहानी की विकास यात्रा

1.1 नयी कहानी

1.2 कहानी के आन्दोलनधर्मी तेवर

1.3 समकालीन कहानी

1.4 आज की कहानी

अध्याय 02 : गोविन्द मिश्र : सृजन के विविध क्षेत्र

2.1 जीवन परिचय

2.2 सृजन के विविध आयाम

2.2.1 कहानियाँ

2.2.2 उपन्यास

2.2.3 निबंध

2.2.4 यात्रा वृत्तांत

2.2.5 बाल साहित्य

2.2.6 कविता

2.2.7 पुरस्कार व सम्मान

अध्याय 03 : गोविंद मिश्रा के कथा–साहित्य में संबंधों का अवमूल्यन

3.1 मध्यवर्गीय जीवन

3.2 दलित जीवन का संघर्ष

3.3 पारिवारिक जीवन और स्त्री–पुरुष संबंधो का यथार्थ

3.4 मानवीय संवेदनषीलता

अध्याय 04 : कथाकार की जीवन दृष्टि और कहानियों का कथ्य

4.1 गोविंद मिश्र : जीवन दृष्टि

4.2 गोविंद मिश्र : कहानियों का कथ्य विवेचन

4.3 गोविंद मिश्र की कहानियों में यथार्थपरकता

अध्याय 05 : गोविन्द मिश्र के कथा–साहित्य में भाषा

5.1 मानवीय संवेदना और कथा भाषा

5.2 कहानियों में भाषायी रसमयता

5.3 कहानियों में षिल्पगत प्रयोग

उपसंहार –

परिषिष्ट –

01. आधार ग्रंथ सूची

02. संदर्भ ग्रंथ सूची

03. पत्र–पत्रिकाएँ

04. साक्षात्कार

3. संबंधित क्षेत्र में पहले से हुए कार्य की संक्षिप्त समीक्षा :–

रविशंकर वि.वि से अब तक गोविंद मिश्र की कहानियों पर शोध कार्य नहीं हुए हैं। गोविंद मिश्र हिंदी साहित्य का एक जाना–पहचाना नाम है। उनका विपुल रचना संसार पांच दर्षकों के आर–पार फैला है। अतः उनके सृजनात्मक अवदान को रेखांकित करना ही मेरे शोध का उद्देष्य है।

4. संबंधित विषय–क्षेत्र में पहले किये गए महत्वपूर्ण कार्य–

गेविंद मिश्र के 'कथा–साहित्य में भारतीयता विषय' पर डॉ. उर्मिला षिरीष का शोध प्रबंध है।

5. शोधकार्य के लिए प्रस्तावित शोध–प्रविधि –

प्रस्तावित शोध–कार्य हेतु साहित्य के प्रचलित मानदंडो के अनुरूप शोध एवं आलोचनात्मक परीक्षण पद्धति अपनाई जाएगी। आवष्यकतानुसार साक्षात्कार एवं समीक्षकों से चर्चा– परिचर्चा कर समकालीन कथा परिदृष्य, सामाजिक यथार्थबोध एवं मध्यवर्गीय जीवन की यथार्थता के साथ–साथ ग्रामीण–जीवन के यथार्थ को रेखांकित कर समीक्षा की जायेगी। इसके अतिरिक्त लेखक से साक्षात्कार कर विषय वस्तु को समझने की पद्धति भी प्रयोग में लाई जाएगी।

6. प्रस्तावित कार्य का प्रत्याषित निष्कर्ष –

आधुनिक सभ्यता में व्यक्ति का निरंतर अवमूल्यन और अपनी प्रतिष्ठा को बनाए रखने के लिए तरह–तरह के आडंबरयुक्त जीवन को उभारना एवं मानवीय मूल्यों एवं आदर्षे के ह्रास को दर्षाना ही मेरे शोध का प्रत्याषित निष्कर्ष होगा।

आधार ग्रंथ सूची –

1. नए–पुराने माँ–बाप, 1970, रचना प्रकाषन इलाहाबाद
2. मेरी प्रिय कहानियाँ, 1976, राजपाल एंड संस दिल्ली
3. अंतः पुर, 1976, नेषनल पब्लिषिंग हाऊस नयी दिल्ली
4. धांसू, 1978, राजकमल प्रकाषन नयी दिल्ली
5. रगड़ खाली आत्महत्याएँ, 1978, संभावना प्रकाषन हापुड़ मेरठ
6. खुद के खिलाफ, 1980, संभावना प्रकाषन, हापुड़ (मेरठ)
7. अपाहिज, 1980, विद्या प्रकाषन मंदिर, दरियागंज
8. खाक इतिहास, 1985,
9. पगला बाबा, 1988, नेषनल पब्लिषिंग हाऊस नयी दिल्ली
10. हवाबाज, 1988, राधाकृष्ण प्रकाषन नयी दिल्ली
11. प्रतिनिधि कहानियाँ, 1989, राजकमल प्रकाषन नयी दिल्ली
12. गोविंद मिश्र की प्रतिनिधि कहानियाँ, 1989, साहित्य भंडार इलाहाबाद
13. गोविंद मिश्र सृजन के आयाम, 1990 वाणी प्रकाषन, नई दिल्ली
14. आसमान कितना नीला, 1992, राधाकृष्ण प्रकाषन प्रा.लि. नयी दिल्ली
15. अर्थ ओझल, 1995, भारतीय ज्ञानपीठ
16. निझरिणी, 1996, नेषनल पब्लिषिंग हाऊस
17. मुझे बाहर निकालो, 2004, राधाकृष्ण प्रकाषन प्रा.लि. नयी दिल्ली

संदर्भ ग्रंथ सूची –

1. अवस्थी देवीषंकर, नयी कहानी : संदर्भ और प्रकृति, राजकमल प्रकाषन
2. कमलेष्वर नयी कहानी की भूमिका, अक्षर प्रकाषन
3. चतुर्वेदी रामस्वरूप, समकालीन यथार्थ और कथाभाषा, वाणी प्रकाषन
4. चन्द्रभान राजकुमार, हिंदी कहानी : फिलहाल, राजकमल प्रकाषन
5. धनंजय, समकालीन कहानी : दिषा और दृष्टि, राजकमल प्रकाषन
6. मिश्र गोविंद, सृजन के आयाम
7. षिरीष उर्मिला, बयाबां में बहार
8. षिरीष उर्मिला, सृजन यात्रा

3. पत्र–पत्रिकाएँ :–

1. सारिका
2. धर्मयुग

14. यादव राजेन्द्र. कहानी अनुभव और अभिव्यक्ति, वाणी प्रकाशन दिल्ली, 2002

15. शिरीष उर्मिला. बयाबां में बहार, किताबघर प्रकाशन, 2014

16. शिरीष उर्मिला. सृजन यात्रा, किताबघर प्रकाशन, 2014

17. मिश्र गोविन्द. साहित्यकार होना, सस्ता साहित्य–मंडल नयी दिल्ली, 2014

3. पत्र–पत्रिकाएँ :–

1. सारिका
2. धर्मयुग
3. दस्तावेज

शोध–निर्देशक

डॉ.(श्रीमती) कृष्णा चटर्जी
सहायक प्राध्यापक (हिन्दी)
शासकीय विश्वनाथ यादव
तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी
महाविद्यालय,
दुर्ग (छ.ग.)

शोधार्थी

अल्का
शासकीय विश्वनाथ यादव
तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी
महाविद्यालय,
दुर्ग (छ.ग.)

प्राचार्य

डॉ. सुशीलचन्द्र तिवारी
शासकीय विश्वनाथ यादव
तामस्कर स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय,
दुर्ग (छ.ग.)